REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

# ''सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन : कक्षा 9वीं के छात्र–छात्राएं

ऋत्विज तिवारी
विभागाध्यक्ष शिक्षा संकाय
चैतन्य कालेज पामगढ़,जांजगीर–चाम्पा

## भूमिका

किसी आवश्यकता की पूर्ति न होने पर समस्या उत्पन्न होती है और यही आवश्यकता एवं पूरित होने में आने वाली बाधाऍं अध्ययन के विषय होते है।

वर्तमान में गिरते हुए सामाजिक मूल्यों एवं बालकों में सामाजिक दृष्टि से व्यवहार गत त्रुटियों एवं सामाजिक परिपक्वता स्तर में गिरावट आ रही है। इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि समस्या के निराकरण हेतु तथा बालकों के उचित सामाजिक विकास में सहायता के लिये सामाजिक परिपक्वता स्तर को जाना जाये ताकि परिपक्वता के स्तर में सुधार के प्रयत्न संभव हो सके। अतः प्रस्तुत लघुशोध में उ.मा. विद्यालय के कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन किया गया है।

## अध्ययन की परिसीमा :–

परिसीमा का तात्पर्य है समस्या के व्यापक क्षेत्र को सीमित करना। किसी भी समस्या का व्यापक या समग्र में अध्ययन नहीं किया जा सकता, व्यापक क्षेत्र में अध्ययन असंभव नहीं दुरूह अवश्य है। व्यापक क्षेत्र या समग्र में अध्ययन करने के समय अधिक लगता है। साथ ही यह विधि खचीलीं भी है इन दोनो से बचने के लिये समस्या के क्षेत्र को सीमित कर दिया जाता है। विभिन्न लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन की परिसीमा निम्न प्रकार से की गई है :–

इस अध्ययन के लिये छ.ग. राज्य के दुर्ग जिले में अंतर्गत भिलाई शहर को लिया गया है।

इस अध्ययन के लिए शासकीय, अशासकीय एवं भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा संचालित विद्यालयों को लिया गया है।

इस अध्ययन के लिए उच्चतर माध्यमिक स्तर के केवल कक्षा 9 वीं के विद्यार्थियों का लिया गया है।

3 विद्यालयों के 180 विद्यार्थियों पर यह अध्ययन किया गया है।

अपने शोधकार्य हेतु समान रूप से 90 बालक एवं 90 बालिकाओं का चयन किया गया है।

## अध्ययन का उद्देश्य :–

शोध एक उद्दे''यपूर्ण प्रक्रिया है। प्रत्येक क्षेत्र शोध कार्यो का नियोजन किया जाता है जिनका वि"ाष्ट उद्दे''य होता है । साधारणतः शोध के तीन उद्देश्य माने जाते है। सैद्धांतिक, तथ्यात्मक तथा व्यावहारिक । शोध कार्य के द्वारा किसी नवीन सिद्धांत का प्रतिपादन होता है। या किसी नवीन व्यावहारिता को प्रस्तुत किया जाता है। अतः शोधकर्ता को अपने कार्य के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से अंकित करना चाहिए। प्रत्येक शोध कार्य में उद्देश्यों को निश्चित कर अवश्य लिखना चाहिए ।

उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना ।

उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

- उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर शालाओं के प्रकार के प्रभाव का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर लिंग व शालाओं के प्रकार की अंतः क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

## परिकल्पना :–

$H_1$ उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की ''सामाजिक परिपक्वता'' पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

$H_2$ उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की ''सामाजिक परिपक्वता'' पर शालाओं के प्रकार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

$H_3$ उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की ''सामाजिक परिपक्वता'' पर लिंग व शालाओं की प्रकार की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

## न्यादर्श :–

सामाजिक अनुसंधान के अभिकल्प का प्रथम पद है न्यादर्श, अनुसंधान के लिये पूरी जनसंख्या को लेकर अपना अनुसंधान करना असंभव तो नहीं किन्तु दुरूह है, इसलिये यहॉ न्यादर्श का चयन करता है।

न्यादर्श Sample समूचे इकाई समूह (जनसंख्या) में से चूनी गई इकाईयों का समूह है लेकिन यह बहुत ही व्यापक परिभाषा है।

अतः न्यादर्श समूचे इकाई समूह में से चुनी गई कुछ ऐसी इकाईयों का समूह है जो समूचे इकाई समूह का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करें।

सामाजिक परिपक्वता के अध्ययन हेतु दुर्ग जिले के अंतर्गत भिलाई शहर के 1 शासकीय, 1 अशासकीय, ओर 1 बी.एस.पी. स्कूल को लिया गया है।

सामाजिक परिपक्वता के अध्ययन हेतु 180 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें 90 बालक और 90 बालिकाऍ है।

| शाला के प्रकार | छात्र | छात्रा | कुल संख्या |
|---|---|---|---|
| शासकीय विद्यालय | 30 | 30 | 60 |
| अशासकीय विद्यालय | 30 | 30 | 60 |
| बी.एस.पी. विद्यालय | 30 | 30 | 60 |
| योग | 90 | 90 | 180 |

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक परिपक्वता के मापन हेतु डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत सामाजिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया इस परीक्षण में सामाजिक परिपक्वता के तीन आयामों एवं तत्वों के आधार पर 90 प्रश्नों का चयन किया गया है।

## अ. व्यक्तिक पर्याप्तता :–

1. **कार्य उन्मुखता** :–कार्य को पूर्ण करने की क्षमता को मानको की जानकारी के सम्बंध में उपयुक्त अभिवृत्तियों के विकास एवं कुशलताओं के संबंध में कार्यो के प्रत्यक्षीकरण में अभिवृत्ति आत्मनिर्भरता को निर्देशित करने वाले कार्य में सुख की अनुभूमि की क्षमता का विकास ।
2. **आत्म निर्देशन** :– यह किसी व्यक्ति की अपनी क्षमताओं में होती है एवं अपने कार्यो पर नियंत्रण करने का अभ्यास में व्यक्त होती है। यह स्वयं को उन कार्यो को निर्देशित करने हेतु जिनमें एक सुरक्षा की भावना होती है और अपने प्रयासों में पूर्ण विश्वास के साथ व्यक्ति जिन्हें प्रारंभ करता है उनमें भी पायी जाती है।

**3. प्रतिबलों को ग्रहण करने की योग्यता** :–यह एक ऐसी योग्यता होती है जो कि व्यक्ति को उपयुक्त संवेगात्मक स्थिरता को प्रदर्शित करती है जिसमे व्यक्ति स्वयं अथवा समूह में बिना घबराये परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया करता है।

### ब. अन्तवैयक्तिक पर्याप्तता :–

**1. सम्प्रेशण** :– यह समझने की योग्यता एवं संभाषण को स्पष्ट एवं सार्थक बनाने की योग्यता में निहित होती है। यह प्रभावात्मक संप्रेषण को विकसित करने में व्यक्ति को संवेदनशील बनाने से संबंधित होती है।

**2. विश्वास** :– यह उम्र सामान्य विश्वास से संबंधित है जब आवश्यकता पड़ने पर व्यक्ति को दूसरो पर निर्भर होना पड़ता है और दूसरों पर विश्वास करना होता है।

**3. सहयोग** – एक पारस्परिक इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु दूसरों के साथ जुड़कर कार्य करने की प्रवृत्ति ही सहयोग कहलाती है। इसमें नियमों का पालन करने की शक्ति भी निहित होती है।

### स.सामाजिक पर्याप्तता :–

**1. सामाजिक वाचन** :– जब एक व्यक्ति में यह भावना पाई जाती है कि वह सामाजिक लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए अपने लक्ष्यों को परिवर्तित एवं पूरा करने का प्रयास करता है।

**2. सामाजिक सहनशीलता** :– इनमें व्यक्ति स्वयं अपनी इच्छा से समाज के उन लोगों के साथ भी अंतःक्रिया करता है जो कि उनसें थोड़े भिन्न होते है। लेकिन वह इन विभिन्नताओं को स्वीकार करते हुए कार्य करता है।

**3. परिवर्तन के प्रति खुलापना** :– जब व्यक्ति सामाजिक परिवर्तन को न केवल अपनी इच्छा से स्वीकार करता है बल्कि इन परिवर्तनों के अनुसार स्वयं को ढालने का प्रयास करता है।

### प्रशासन :–

यह एक सामूहिक परीक्षण है जिसे कक्षा की स्थिति में सामूहिक रूप से प्रशासित किया जाता है । परीक्षण से संबंधित निर्देश मापनी के प्रथम पृष्ठ पर अंकित है। जब इसे प्रशासित करने के लिये उपर्युक्त वातावरण निर्मित हो जाता है। तब परीक्षक द्वारा समूह को पढ़कर बताया जाता है साथ ही विद्यार्थियों को उसकी उपयोगिता एवं उद्देश्य से अवगत कराने के पश्चात् परीक्षण प्रशासित किया गया । विद्यार्थियों ने अपने उत्तर परीक्षण प्रपत्र पर अंकित किये। परीक्षण को पूर्ण करने में 45 मिनट से 1 घंटे का समय लगता है।

### फलांकन :–

समाजिक परिपक्वता मापनी में धनात्मक व ऋणात्मक दोनो प्रकार के प्रश्नों को शामिल किया गया है। विद्यार्थी को अपने विचार चार विकल्पनों में क्रमशः पूर्ण सहमत, असहमत पूर्ण असहमत में व्यक्त करना है। धनात्मक पदो के लिए प्राप्तांक क्रमशः 1. निष्कृट, 2. बुरा, 3.सामान्य, 4. उत्तम पदो के लिए प्राप्तांक क्रमशः प्रदान किये गये।

### प्रयुक्त साख्यिकी :–

परिस्थिति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम तथा विधियों में परिवर्तन होता रहता है। इन परिवर्तन की सार्थकता का परीक्षण करने के लिये शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रयोग इन अनुसंधान में होते रहते है। प्रयोगों एवं अनुसंधानों का कार्य सांख्यिकी विश्लेषण के अभाव में विश्वसनीय एवं प्रमाणित नहीं होता। अतः अनुसंधान एवं प्रयोग की व्याख्या में सांख्यिकीय का उपयोग अत्याधिक महत्वपूर्ण है।

अतः समूह का निश्चित व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक वर्णन करने के लिये दो चरों में सम्बंध ज्ञान करने के लिये समूह में भिन्नता प्रदर्शित करने एवं उस निर्णय के लिये सांख्यिकीय विधियों का ज्ञान आवश्यक है।

कक्षा 9 वीं के विद्यार्थियों की ''सामाजिक परिपक्वता'' में लिंग व शाला के प्रकार के प्रभाव को ज्ञात करने के लिए Anova प्रयुक्त किया गया है जिसके पद निम्न है :–

(1) M (मध्यमान) $= \frac{\sum x}{N}$

(2) $C = \frac{(\sum x)^2}{N}$

(3) $SS_T = \sum x^2 - C$

(4) $SS_{Sex} = \frac{(\sum x)^2}{N1} + \frac{(\sum x)^2}{N2} - C$

(5) $SS_{School} = \frac{(\sum x)^2}{N1} + \frac{(\sum x)^2}{N2} - C$

(6) $SS_{Sex.School} = SS_T - (SS_{Sex} + SS_{School})$

(7) $SS_{bet+cell} = \frac{(\sum x)^2}{N1} + \frac{(\sum x)^2}{N2} + \frac{(\sum x)^2}{N2} + \frac{(\sum x)^2}{N2} - C$

(8) $SS_{within} = SS_T - SS_{cell}$

**शोध अभिकल्प :–**

एक शोधकर्ता अपने अनुसंधान को आरंभ करने से पूर्व उसके सभी पक्षों के सम्बंध में पहले ही निर्णय लेकन आयोजन करता है। शोध अभिकल्प के अंतर्गत क्रमबद्ध रूप से प्रत्येक सोपान के संबंध में विवरण दिया जाता है। शोध अभिकल्प का अर्थ ही वह योजना या कार्यप्रणाली है जिसके अनुकूल शोध किया जाता है।

वास्तविक शोध करने के पहले हो शोधकर्ता एक योजना बनाता है। कि शोध कैसे किया जायेगा ? किस प्रकार के प्रतिदर्श का उपयोग किया जायेगा? स्वतः चरों को कैसे नियंत्रित किया जायेगा तथा प्राप्त ऑकड़ों का निरूपण कैसे किया जायेगा? ताकि सही परिणाम प्राप्त हो सकें। शोधकर्ता की इसी योजना को शोध अभिकल्प कहते है।

**चर :–** शाब्दिक रूप से चर का अर्थ होता है कि जो परिवर्तन हो सकें।

**गैरेट के अनुसार :–**

चर एक ऐसी विशेषतायें तथा गुण होते है जिनमें मात्रात्मक विभिन्नतायें स्पष्ट रूप से दृष्टि गोचर होती है। तथा जिनमें एक आयाम पर परिवर्तन होते रहते है।

चर मुख्यतः तीन प्रकार के होते है :–

**चर** – स्वतंत्र चर
आश्रित चर
नियंत्रित चर

**स्वतंत्र चर :–**

साधारणः प्रयोगकर्ता जिस कारक के प्रभाव का अध्ययन करना चाहता है और प्रयोग में जिस पर उसका नियंत्रण नहीं रहता है, उसे स्वतंत्र चर कहते है।

**आश्रित चर :–**

आश्रित चर वे होते है जिन पर स्वतंत्र चर का प्रभाव पड़ता है अर्थात् स्वतंत्र चर में परिवर्तन होने पर ये प्रभावित होते है।

## नियंत्रित चर :–

नियंत्रित चर उन्हें कहा जाता है, जिनको स्वतंत्र एवं आश्रित चर के संबंध पर दृष्प्रभाव पड़ने के कारण नियंत्रित किया जाता है।

| शाला के प्रकार | छात्र | छात्रा | कुल संख्या |
|---|---|---|---|
| शासकीय विद्यालय | 30 | 30 | 60 |
| अशासकीय विद्यालय | 30 | 30 | 60 |
| बी.एस.पी. विद्यालय | 30 | 30 | 60 |
| योग | 90 | 90 | 180 |

## प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध–प्रक्रिया में आगमन एवं निगमन तर्क के प्रयोग को व्यक्त करता है। प्रायः प्रदत्तों को उपसमूहों में विभाजित कर उनका विश्लेषण एवं संश्लेषण इस प्रकार किया जाता है कि दी गई परिकल्पना स्वीकृत अथवा अस्वीकृत हो सके। अंतिम परिणाम नये सिद्धांत की खोज अथवा सामान्यीकरण होता है।

प्रदत्तों के विश्लेषण से अभिप्राय उसमें निहित तथ्यों को निर्धारित करने हेतु सारणीबद्ध विषय सामग्री का अध्ययन करना होता है। इसके अंतर्गत निहित जटिल कारकों के आधार पर सरल एवं नवीन व्यवस्था के संदर्भ में संयोजित करना होता है। शोधकार्य के अंतर्गत तथ्यों का विश्लेषण करते समय अपने अध्ययन के उद्देश्य को दृष्टिगत रखकर आवश्यकतानुसार सांख्यिकीय प्रविधियों एवं विधियों का प्रयोग किया जाता है।

विश्लेषण से प्राप्त परिणाम जो निष्कर्ष प्रस्तुत करते है। उसका यथार्थ के आधार पर निष्कर्षिकरण करना होता है। जिसके अंतर्गत परिणाम में सार्थकता स्तर की जॉच एवं मूल बातें निहित होती है, जो समस्या से संबंधित चर के संबंध में शोधकर्ता को एक नई दिशा प्रदान करती है।

प्रस्तुत लघुशोध की समस्या माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना है अतः इस अध्याय में शासकीय, अशासकीय तथा बी.एस.पी. विद्यालय के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता की योग्यता पर आंकड़ों व्याख्या, विश्लेषण एवं निष्कर्ष के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण व उसकी सार्थकता हेतु 2way Anova द्वारा गणना की गई है। अतः प्रथम तालिका 4.11 में कक्षा 9वी की विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर शाला के प्रकार एवं लिंग के प्रभाव को देखने के लिए प्राप्त परिणामों को प्रदर्शित किया गया है।

## परिकल्पना :–

$H_1$ '' उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शासकीय, निजी एवं बी.एस.पी. विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।''

उपर्युक्त परिकल्पना की जॉच हेतु एकत्रित ऑकड़ो का सांख्यिकीय विश्लेषण उपरांत मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गयी जिसे सारणी क्रमांक 1 में प्रदर्शित किया गया।

### सारणी क्रमांक –1

| Sex | Number of Student | Mean | S.D |
|---|---|---|---|
| Boy | 90 | 96.56 | 3.26 |
| Girl | 90 | 96.18 | 4.35 |

सारणी क्रमांक 4.10 के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् बालकों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान – 96.56 तथा बालिकाओं की सामाजिक परिपक्वता का समान्तर मध्य – 96.18 प्राप्त हुआ ।

यहॉ पर शासकीय, निजी एवं बी.एस.पी. विद्यालय के छात्र व छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में अंतर को देखने का प्रयास किया गया है तथा उनकी सामाजिक परिपक्वता पर लिंग प्रभाव को भी देखने का प्रयास

किया गया है उसके लिए 2x2 Anova की गणना की गई है। शाला के प्रकार एवं लिंग के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के योग एवं वर्गो के योग की गणना की गई तथा उसे तालिका क्रमांक ' में प्रस्तुत किया गया है–

सारणी क्रमांक –1,1

| शाला के प्रकार | छात्र | छात्रा | योग |
|---|---|---|---|
| शासकीय विद्यालय | $\sum x = 2871$<br>$\sum x^2 = 224979$<br>n = 30 | $\sum x = 2870$<br>$\sum x^2 = 2740750$<br>n = 30 | $\sum x = 5741$<br>$\sum x^2 = 549729$<br>n = 60 |
| अशासकीय विद्यालय | $\sum x = 2898$<br>$\sum x^2 = 280040$<br>n = 30 | $\sum x = 2883$<br>$\sum x^2 = 277417$<br>n = 30 | $\sum x = 5781$<br>$\sum x^2 = 557457$<br>n = 60 |
| बी.एस.पी विद्यालय | $\sum x = 2922$<br>$\sum x^2 = 285188$<br>n = 30 | $\sum x = 2904$<br>$\sum x^2 = 282228$<br>n = 30 | $\sum x = 5826$<br>$\sum x^2 = 567416$<br>n = 60 |
| योग | $\sum x = 8691$<br>$\sum x^2 = 840207$<br>n = 90 | $\sum x = 8657$<br>$\sum x^2 = 834395$<br>n = 90 | $\sum x = 17348$<br>$\sum x^2 = 1674602$<br>n = 180 |

मध्यमान की सार्थकता प्राप्त करने हेतु 2x2 Anova की गणना की गयी। जिसे सारणी क्रमांक 2 में प्रदर्शित किया गया ।

सारणी क्रमांक –2

| Source | Sex/df | SS | Ms | F | Sig. |
|---|---|---|---|---|---|
| Sex | 1 | 6.511 | 6.511 | .44 | NS |
| Type of School | 2 | 60.3 | 30.15 | 2.04 | NS |
| Intreraction Sex, Types of School | 2 | 2.07 | 1035 | .09 | NS |
| SSw | N – ab =180-6 =174 | 2570.9 | 14.77 | - | - |

सारणी क्रमांक 3 से स्पष्ट होता है कि $(F=.44\ ,\ df = 1,174,\ P < 0.05)$ प्राप्त F का मान सारणी मान से कम है इसलिए इसे सार्थक नहीं माना जायेगा अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत मानी जायेगी।

**परिणाम :–** उच्च माध्यमिक विद्यालय के शासकीय व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

$H_2$ उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर शालाओं के प्रकार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की जॉच हेतु एकत्रित ऑकड़ो का सांख्यिकीय विश्लेषण उपरांत मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गयी जिसे सारणी क्रमांक 3 में प्रदर्शित किया गया।

**सारणी क्रमांक –3**

| Type of School | Number of Student | Mean | S.D |
|---|---|---|---|
| Govt. | 60 | 95.68 | 2.656 |
| Pvt. | 60 | 96.35 | 2.620 |
| B.S.P. | 60 | 97.1 | 5.385 |

सारणी क्रमांक 3 के अनुसार शासकीय विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान – 95.68 व निजी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का समान्तर माध्य 96.35 प्राप्त हुआ तथा बी.एस.पी. विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 97.1 प्राप्त हुआ।

मध्यमान की सार्थकता प्राप्त करने हेतु 2x2 Anova की गणना की गयी जिसे सारणी क्रमांक 2 में प्रदर्शित किया गया ।

सारणी क्रमांक 2 से स्पष्ट होता है कि $(F=2.04, \quad df = 2,174, \quad P < 0.05)$ प्राप्त F का मान सारणी मान से कम है इसलिए इसे सार्थक नहीं माना जायेगा अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत मानी जायेगी।

**परिणाम** :– उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर शालाओं के प्रकार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

$H_3$ ''उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर लिंग व शालाओं के प्रकार की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।''

सारणी क्रमांक 2 से स्पष्ट होता है कि $(F=.09 , \ df = 2,174, P < 0.05)$ प्राप्त F का मान सारणी मान से कम है इसलिए इसे सार्थक नहीं माना जायेगा अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत मानी जायेगी।

**परिणाम** :– ''उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर लिंग व शालाओं के प्रकार की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।''

## परिणाम एवं व्याख्या

अध्याय 4 में सांख्यिकीय विश्लेषण करने के उपरांत निम्न परिणाम प्राप्त हुए है :–

$H_1$ -उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

$(F=.44 , \ df = 1,174, P < 0.05)$ जो सार्थक नहीं है। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत होगी।

## परिणाम –

उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

$H_2$ -उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर शालाओं के प्रकार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

(F=2.04 , df = 2,174, P < 0.05) जो सार्थक नहीं है। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत होगी।

**परिणाम –**

उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर शालाओं के प्रकार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

$H_3$ -उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता पर लिंग व शालाओं के प्रकार की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

(F=.09 , df = 2,174, P < 0.05) जो सार्थक नहीं है। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत होगी।

**परिणाम –**

**परिणाम (निष्कर्ष) :–**

कक्षा 9वीं के छात्रों का सामाजिक परिपक्वता अध्ययन पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसका कारण यह है कि छात्र–छात्राओं को आज विद्यालयों में समान स्तर पर समान ज्ञान व शिक्षा प्रदान की जा रही है।

कक्षा 9वीं के छात्रों का सामाजिक परिपक्वता अध्ययन पर उनके विद्यार्थियों के प्रकार का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा। सभी शालाओं के प्रकार का छात्रों पर प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि सर्वशिक्षा अभियान के तहत शासकीय शालाओं को शासन के द्वारा निजी शालाओं की तरह ही सुविधा प्रदान की जा रही है व लगभग सभी छात्र अपने योग्यतानुसार हर समस्या के समाधान का प्रयत्न करते है।

कक्षा 9वीं के छात्रों का सामाजिक परिपक्वता अध्ययन पर उनके लिंग व स्कूल के प्रकार की अंतःक्रिया पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा। बालक व बालिकाओं को समान मानकर, समान शिक्षा प्रदान की जा रही है व सभी 14 वर्ष के बालकों व बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा व अनिवार्य शिक्षा दी जा रही है व हर शालाओं में सभी छात्रों को समान ध्यान दिया जाता है।

## REFERENCE:

**भाई योगेन्द्र जीत** – बालमनोविज्ञान बाल विकास, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2, पृष्ठ–(72–156)

**भटनागर** – विकास और अधिगम का मनोविज्ञान जून 2008, इंदिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय शिक्ष विद्यापीठ, नई दिल्ली , पृष्ठ सं.(30,31)

**भटनागर, डॉ. ए.बी.** – शिक्षण अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार

**भटनागर, सुरेश** – शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, लायल बुक डिपो, पृष्ठ (119-130)

**चौबे, पी.एस.** – डेवलपमेन्टल साइकोलॉजी, आगरा, लक्ष्मीनारायण, अग्रवाल, पृष्ठ सं.(167-168)

**गुप्ता** – ''सामाजिक क्षेत्र में उच्च ऐच्छिक अभिभावकीय प्राथमिकता का बालकों के शैक्षिक समायोजन पर प्रभाव'', थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली, राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद, पृष्ठ सं.(305)

**गुप्ता राम बाबू** – विकासालय मनोविज्ञान, पृष्ठ सं.(57-58, 247-249,175-176, 215-217)

**जैन प्रभा एवं पटेल अमिशा** – ''नौकरी पेशा एवं घरेलु माताओं के बालिकाओं की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन'', रिसेंट रिसर्च इन एजुकेशन एंड साकोलॉजी वाल्यूम–8, पृष्ठ सं.(46-48)

LBP PUBLICATION